Download UPPSC/UPPCS Mains 2019 Optional Exam Question Paper

"Hindi Literature (Paper 2)"

"Held on 26-09-2020"

Downloaded from: http://studymarathon.com/

No. of Printed Pages : 4

Serial No.

GLPC – 32/19-Paper-II

हिन्दी साहित्य (प्रश्न–पत्र – II)

HINDI LITERATURE (Paper – II)

निर्धारित समय : तीन घंटे] [अधिकतम अंक : 200

Time Allowed : Three Hours] [Maximum Marks : 200

विशेष अनुदेश : (i) कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(ii) प्रश्न संख्या **एक** और **पाँच अनिवार्य** हैं ।

(iii) **प्रत्येक** खण्ड से कम से कम **दो** प्रश्न किए जाने **आवश्यक** हैं ।

(iv) **सभी** प्रश्नों के अंक प्रश्न के **सम्मुख** अंकित हैं ।

खण्ड – अ

1. किन्हीं **दो** अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए । **(20+20=40)**

(क) चौसठ दीवा जोइ करि, चौदह चंदा माँहि ।
तिहिं धरि किसकौ चानिणौं, जिहि घरि गोबिन्द नाहिं ।।
निसि अधियारी कारणै, चौरासी लख चंद ।
अति आतुर ऊदै किया, तऊ दिष्टि नहिं मंद ।।
भली भई जू गुर मिल्या, नहीं तर होती हाँणि ।
दीपक दिष्टि पतंग ज्यूँ, पड़ता पूरी जाँणि ।।

(ख) चैत बसंता होइ धमारी । मोहिं लेखे संसार उजारी ।
पंचम विरह पंच सर मारै । रकत रोइ सगरौं बन ढ़ारै ।।
बूड़ि उठे सबतरिवर पाता । भीजि मजीठ, टेसु बनराता ।।
बौरे आम फरै अब लागे । अबहुँ आउ घर, कंत सभागे ।

Downloaded from: http://studymarathon.com/

सहस भाव फूली बनसपती । मधुकर घूमहिं सँवरि मालती ।।
मोकहँ फूल भए सब काँटे । दिस्टि परत जस लागहिं चाँटे ।
फरि जोवन भए नारंग साखा । सुआ बिरह अब जाइ न राखा ।
घिरिनि परेवा होइ पिउ । आउ बेगि परु टूटि ।
नारि पराए हाथ है, तोहि बिनु पाव न छूटि ।

(ग) प्रीति करि दीन्हीं गरे छुरी ।
जैसे बधिक चुगाय कपटकन पीछे करत बुरी ।
मुरली मधुर चेंप कर काँपो मोरचंद्र ठटवारी ।
बंक बिलोकनि लूक लागि बस सकी न तनहिं सम्हारी ।
तलफत छाड़ि चले मधुबन को फिरि कै लई न सार ।
सूरदास वा कलप-तरोवर फेरि न बैठी डार ।।

(घ) कौन हो तुम वसंत के दूत,
विरस पतझड़ में अति सुकुमार ।
घन तिमिर में चपला की रेख,
तपन में शीतल मंद बयार ।।
नखत की आशा किरण समान,
हृदय के कोमल कवि की रात
कल्पना की लघुलहरी दिव्य,
कर रही मानस हलचल शान्त ।।

2. (क) कबीर के दार्शनिक विचारों का व्यावहारिक और सैद्धांतिक पक्ष क्या है ? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए । 15

(ख) रामचरित मानस के महाकाव्यत्व की समीक्षा कीजिए । 15

(ग) सूरदास वात्सल्य के सिरमौर हैं । उक्त कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए । 10

Downloaded from: http://studymarathon.com/

3. (क) बिहारी के काव्य में शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी का प्रवाह होता है । प्रस्तुत कथन को दृष्टिगत रखते हुए, बिहारी की सृजनशीलता का परिचय दीजिए । 15

(ख) राम की शक्ति पूजा में कवि के आत्म संघर्ष के विविध पक्षों का उद्‌घाटन कीजिए । 15

(ग) जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में राष्ट्रीयता के स्वर किन-किन स्थानों में व्यक्त हुए हैं ? उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए । 10

4. (क) मुक्तिबोध के काव्य में मानवीय संवेदना और संघर्ष के विविध पक्षों को उदाहरण सहित समझाइए । 15

(ख) सुमित्रानन्दन पंत की रचनाओं का प्रमुख प्रतिपाद्य क्या है ? उक्त कथन के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए । 15

(ग) क्या नागार्जुन आम जनता के कवि हैं ? प्रस्तुत कथन के पक्ष में उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए । 10

खण्ड – ब

5. किन्हीं **दो** गद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए । **(20+20=40)**

(क) जो समझता है कि वह दूसरों का अपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है ? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार । किसी को उससे सुख मिल जाए, बहुत अच्छी बात है; नहीं मिल सका, कोई बात नहीं; परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए । सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दु:ख पहुँचाने का अभिमान तो नितराँ गलत ।

(ख) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं । इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं ।

(ग) ऐसा जीवन तो विडम्बना है, जिसके लिए दिन-रात लड़ना पड़े । आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दाँत-पर दाँत रखे, मुट्ठियों को बाँधे हुए लाल आँखों से एक दूसरे को घूरा करे । वसन्त के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में, चुपचाप बहनेवाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाए ।

Downloaded from: http://studymarathon.com/

(घ) वेदान्त .... भौतिकवाद .... सापेक्षवाद .... मानवतावाद । हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है । व्याध के तीर से जख्मी हिरण-शावक-सी मानवता को पनाह कहाँ मिले ? हा-हा-हा ! अट्टहास ! व्याधों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है । छोटा सा, नन्हा-सा हिरण हाँफ रहा है । छोटे फेफड़े की तेज धुकधुकी । नीलोत्पल ! नहीं-नहीं । यह अँधेरा नहीं रहेगा । मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूँजती है-पवित्र वाणी । उन्हें प्रकाश मिल गया है । तेजोमय ! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर शीतल चन्दन लेप रहा है ।

6. (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की अन्धेर नगरी की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता क्या है ? समीक्षा कीजिए । 15

(ख) जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कन्दगुप्त की ऐतिहासिक प्रामाणिकता पर प्रकाश डालिए । 15

(ग) वस्तु परकता या विषय परकता की दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों का मूल्यांकन कीजिए । 10

7. (क) गोदान उपन्यास के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए । 15

(ख) फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आंचल के शीर्षक का अर्थ समझाते हुए, इसके शिल्प विन्यास का मूल्यांकन कीजिए । 15

(ग) 'कुटज' क्या है ? प्रस्तुत निबन्ध के आधार पर इसके दार्शनिक पक्ष की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए । 10

8. (क) प्रेमचन्द की कहानियों में ग्रामीण जीवन अपने विस्तृत फलक पर उजागर हुआ है । इस कथन को दृष्टिगत रखते हुए प्रेमचन्द की कहानी कला पर प्रकाश डालिए । 15

(ख) 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता क्या है ? उदाहरण सहित समझाइए । 15

(ग) कहानी कला के आधार पर अज्ञेय की रोज कहानी की समीक्षा कीजिए । 10

Downloaded from: http://studymarathon.com/